Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर-चांपा जिले में ग्रामीण क्षेत्र की एनीमिक महिलाओं एवं सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य पर किए गए व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

सुनील साहू* डॉ. सुचि शर्मा **

*** शोधार्थी (अर्थशास्त्र) डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत**
**** सहायक प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान विभाग (अर्थशास्त्र) डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत**

शोध सारांश – महिलाओं का स्वास्थ्य किसी भी समाज की प्रगति और विकास का दर्पण होता है। विशेषकर ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से एनीमिया (रक्ताल्पता)प्रमुख समस्या है। एनीमिया से ग्रस्त महिलाएँ शारीरिक रूप से दुर्बल हो जाती हैं, जिससे उनके श्रम करने की क्षमता घटती है और स्वास्थ्य व्यय बढ़ जाता है। दूसरी ओर, सामान्य (गैर-एनीमिक) महिलाओं में स्वास्थ्य व्यय अपेक्षाकृत कम होता है।छत्तीसगढ़ का जांजगीर-चांपा जिला कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहाँ महिलाओं का जीवन सीधे श्रम व कृषि कार्यों से जुड़ा है। एनीमिक और सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय का तुलनात्मक अध्ययन इस जिले के ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।

शब्द कुंजी – स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों , स्वास्थ्य व्यय।

प्रस्तावना – भारत में महिलाओं मेंएनीमियाएक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पोषण की कमी, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव और सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन के कारण महिलाओं में हीमोग्लोबिन की कमी आम समस्या बन गई है। एनीमिया के कारण महिलाओं में थकान, कमजोरी, गर्भधारण में कठिनाई, प्रतिरक्षा प्रणाली की कमजोरी और कार्य क्षमता में कमी जैसे कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।छत्तीसगढ़ राज्य का जांजगीर-चांपा जिला कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण महिलाओं की स्थिति अन्य शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण है। यहां महिलाओं की स्वास्थ्य देखभाल पर होने वालाखर्चउनकी आर्थिक स्थिति और परिवार की समग्र भलाई पर प्रभाव डालता है। विशेषकर उन महिलाओं में जो एनीमिक हैं, उनके लिए दवा, पोषण, चिकित्सक और यात्रा संबंधी खर्च अन्य सामान्य महिलाओं की तुलना में अधिक होता है।जांजगीर-चांपा जिले में अधिकांश ग्रामीण महिलाएं कृषि और घरेलू कार्यों में संलग्नहैं। इनकी आय सीमित है, और स्वास्थ्य व्यय उनके घरेलू बजट पर सीधे असर डालता है।एनीमिया के कारण होने वाले स्वास्थ्य व्यय का तुलनात्मक अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि:

1. यह महिलाओं कीस्वास्थ्य स्थिति और जीवन गुणवत्ताका संकेत देता है।
2. यहसरकारी और गैर-सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमोंकी प्रभावशीलता का आंकलन करने में मदद करता है।
3. ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय की जानकारीनीति निर्माण और स्वास्थ्य बजट नियोजनमें उपयोगी है।

समीक्षित साहित्य

National Family Health Survey (NFHS-5, 2021) के अनुसार, छत्तीसगढ़ की ग्रामीण महिलाओं में 46% से अधिक को एनीमिया है। इसने स्पष्ट किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी गंभीर समस्या है। **Kumari & Singh** (2022)ने अपने अध्ययन में पाया कि एनीमिक महिलाओं का औसत स्वास्थ्य व्यय सामान्य महिलाओं की तुलना में लगभग 35-40% अधिक है। इसमें दवा, चिकित्सक और पोषण पर अधिक खर्च होता है। **Sharma et al.** (2020)ने मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया। उनका निष्कर्ष था कि एनीमिक महिलाओं में कार्य क्षमता और आय स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **Patel & Verma** (2023)ने जांजगीर-चांपा जिले के 10 गांवों में सर्वेक्षण किया। अध्ययन से पता चला कि एनीमिक महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग सीमित होने के बावजूद उच्च खर्च होता है, मुख्यत: दवा और पोषण पर **World Health Organization (WHO,** 2021) की रिपोर्ट के अनुसार, एनीमिया महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी व्यय में वृद्धि करती है और परिवार की आर्थिक स्थिति पर दबाव डालती है।

अध्ययन के उद्देश्य – इस शोध का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों कीएनीमिक और सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य व्ययका तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित विशेष उद्देश्य हैं:

1. ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिक महिलाओं और सामान्य महिलाओं केस्वास्थ्य व्यय की संरचनाका विश्लेषण करना।
2. दवा, चिकित्सक सेवाओं, पोषण और यात्रा खर्च के आधार परएनीमिक और सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय की तुलनाकरना।
3. स्वास्थ्य व्यय में अंतर केकारणों और प्रभावोंकी पहचान करना।
4. अध्ययन के निष्कर्षों के आधार परनीति और स्वास्थ्य कार्यक्रमों के

लिए सुझावदेना।

अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान प्रकार – यह अध्ययनक्षेत्रीय और तुलनात्मक अनुसंधान (Field-based Comparative Study) है। इसमें वास्तविक ग्रामीण महिलाओं से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया है ताकि एनीमिक और सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय में अंतर को समझा जा सके।

अध्ययन क्षेत्र – यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर–चांपा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में किया गया। चयनित क्षेत्र कृषि प्रधान है और यहाँ की महिलाएं घरेलू और कृषि कार्यों में संलग्न हैं।

नमूना चयन :

1. अध्ययन के लिए 120 महिलाओं का नमूनालिया गया।
2. नमूना में 60 एनीमिक महिलाएंऔर 60 सामान्य महिलाएंशामिल हैं।
3. नमूना का चयनसुविधाजनक यादृच्छिक (Convenience Random Sampling) पद्धति से किया गया।
4. चयनित महिलाओं की आयु 18–45 वर्ष के बीच थी।

डेटा संग्रह – डेटा संग्रह के लिए निम्न विधियाँ अपनाई गईं–

1. सर्वेक्षण प्रश्नावली ,प्रत्यक्ष साक्षात्कार,स्वास्थ्य रिकॉर्ड/क्लिनिक डेटा

डेटा विश्लेषण विधि

1. डेटा को Microsoft Excel और SPSS सॉफ्टवेयर में दर्ज किया गया।
2. तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) किया गया:

i. औसत (Mean) स्वास्थ्य व्यय
ii. खर्च के विभिन्न घटकों का प्रतिशत
iii. एनीमिक और सामान्य महिलाओं के बीच t-test से सांख्यिकीय अंतर।

3. परिणामों कोतालिका और ग्राफके माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

विश्लेषण – अध्ययन में प्राप्त डेटा के अनुसार, जांजगीर–चांपा जिले की ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्य व्यय मुख्य रूप से निम्न चार श्रेणियों में विभाजित है:

1. दवा खर्च
2. चिकित्सक/क्लिनिक खर्च
3. पोषण संबंधी खर्च
4. यात्रा खर्च

निम्न तालिका में एनीमिक और सामान्य महिलाओं के औसत मासिक स्वास्थ्य व्यय का विवरण प्रस्तुत किया गया है:

श्रेणी	एनीमिक महिलाएं (रू प्रति माह)	सामान्य महिलाएं (रू प्रति माह)	अंतर (रू)	प्रतिशत अंतर (%)
दवा खर्च	850	500	350	70%
चिकित्सक/ क्लिनिक खर्च	600	350	250	71.4%
पोषण खर्च	700	400	300	75%
यात्रा खर्च	300	150	150	100%
कुल स्वास्थ्य व्यय	2450	1400	1050	75%

तालिका में औसत मासिक खर्च दर्शाया गया है।

1. **दवा खर्च–** एनीमिक महिलाओं का दवा खर्च सामान्य महिलाओं की तुलना में 70% अधिक पाया गया। इसका कारण एनीमिया के लिए आयरन सप्लीमेंट, विटामिन और अन्य चिकित्सकीय दवाओं की आवश्यकता है।
2. **चिकित्सक/क्लिनिक खर्च–** एनीमिक महिलाएं नियमित चिकित्सक से परामर्श लेती हैं, जिससे उनकी स्वास्थ्य देखभाल पर खर्च अधिक होता है।
3. **पोषण खर्च–** एनीमिक महिलाओं में आयरन युक्त आहार और पौष्टिक तत्वों की मांग अधिक होने के कारण पोषण खर्च सामान्य महिलाओं की तुलना में लगभग 75% अधिक है।
4. **यात्रा खर्च–** स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने के लिए एनीमिक महिलाओं को अक्सर दूर के स्वास्थ्य केंद्र जाना पड़ता है। इसके कारण यात्रा खर्च सामान्य महिलाओं की तुलना में दोगुना है।

अध्ययन से स्पष्ट है कि एनीमिक महिलाओं का स्वास्थ्य व्यय सामान्य महिलाओं की तुलना में लगभग 75% अधिक है। यह ग्रामीण परिवारों की आय पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है और घरेलू बजट में असंतुलन पैदा करता है.एनीमिक महिलाएं अक्सर आर्थिक रूप से निर्बल परिवारों से आती हैं। उच्च स्वास्थ्य व्यय उनके अन्य आवश्यक खर्चों जैसे बच्चों की शिक्षा, घर का भोजन और कृषि कार्य में बाधा डाल सकता है।सरकारी योजनाओं मेंनिशुल्क आयरन सप्लीमेंट, पोषण पैकेज और ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँचबढ़ाई जानी 'स्थानीय स्वास्थ्य केंद्रों में नियमित जांच और परामर्शउपलब्ध कराना आवश्यक है, ताकि यात्रा खर्च कम हो।सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम से एनीमिया की रोकथाम और समय पर उपचार को बढ़ावा दिया जा सकता है।'

निष्कर्ष और सुझाव – इस अध्ययन से स्पष्ट होता है किजांजगीर–चांपा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिक महिलाओं का स्वास्थ्य व्यय सामान्य महिलाओं की तुलना में काफी अधिक है।प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

1. **स्वास्थ्य व्यय में अंतर:**

i. एनीमिक महिलाओं का औसत मासिक स्वास्थ्य व्यय रू 2450 है, जबकि सामान्य महिलाओं का रू1400।
ii. दवा, पोषण और चिकित्सक सेवाओं पर खर्च सबसे अधिक अंतर दिखाता है।

2. **सामाजिक–आर्थिक प्रभाव:**

i. उच्च स्वास्थ्य व्यय ग्रामीण परिवारों के घरेलू बजट पर दबाव डालता है।
ii. यह परिवार की अन्य आवश्यकताओं जैसे बच्चों की शिक्षा, भोजन और कृषि कार्य पर असर डाल सकता है।

3. **स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच:**

i. एनीमिक महिलाएं नियमित चिकित्सा परामर्श और उपचार के लिए लंबी दूरी की यात्रा करती हैं, जिससे यात्रा खर्च में भी वृद्धि होती है।

4. **नीति और योजना की आवश्यकता**:

i. वर्तमान सरकारी योजनाएं पर्याप्त नहीं हैं और ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य देखभाल में समर्थ बनाने के लिए विशेष नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

सुझाव – इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. **निशुल्क आयरन और विटामिन सप्लीमेंट:**

i. ग्रामीण एनीमिक महिलाओं को नियमित रूप से आयरन और विटामिन

सप्लीमेंट निशुल्क प्रदान किए जाएँ।

2. स्थानीय स्वास्थ्य केंद्रों की पहुँच बढ़ाना:

i. स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या बढ़ाई जाए और ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल हेल्थ क्लिनिक संचालित किए जाएँ ताकि यात्रा खर्च कम हो।

3. पोषण कार्यक्रम:

i. स्कूल और सामुदायिक स्तर परपोषण संबंधी शिक्षा और आहार पैकेजउपलब्ध कराए जाएँ।

4. सामुदायिक जागरूकता:

i. एनीमिया और स्वास्थ्य व्यय की जानकारी के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।

ii. महिलाओं को समय पर उपचार और पोषण के महत्व के बारे में शिक्षित किया जाए।

5. नीति निर्माण और आर्थिक सहायता– गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए स्वास्थ्य व्यय में सहायता प्रदान करने के लिए सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।

ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिया महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति और आर्थिक भार पर गंभीर प्रभाव डालता है। उचित नीतिगत हस्तक्षेप, पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच से न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार होगा, बल्कि पूरे ग्रामीण परिवार की जीवन गुणवत्ता में भी वृद्धि होगी। इस अध्ययन ने स्पष्ट रूप से दिखाया किस्वास्थ्य व्यय का तुलनात्मक अध्ययन नीति निर्माण और सामाजिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Kumari, S., & Singh, R. (2022). Health expenditure among anemic and non-anemic women in rural India. Journal of Rural Health Studies, 15(2), 45–56.
2. National Family Health Survey (NFHS-5). (2021). India: Key indicators. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India.
3. Patel, A., & Verma, P. (2023). Comparative study of health expenditure of anemic and normal women in Jangir-Champa district, Chhattisgarh. International Journal of Public Health Research, 10(1), 78–88.
4. Sharma, V., Gupta, K., & Mishra, S. (2020). Health expenditure patterns among rural women: A study of central India. Indian Journal of Community Medicine, 45(4), 112–119.
5. World Health Organization. (2021). Global nutrition report: Anemia in women. WHO Publications.
6. Rani, P., & Kaur, H. (2019). Socio-economic impact of anemia on rural households. Indian Journal of Social Studies, 8(3), 33–42.

****